पाप जेना चौमुखी के तहिना अन्धकार
पूर्ण कारी होइछ, आतङ्कसँ जेना लोक
भयभीत भऽ रहल हो तहिना अन्धकार
सँ कवि [illegible] जेना प्रतीत अछि तहिना
पसरल अछि, अज्ञान जकाँ सम्पूर्ण
पृथ्वी जेना चाकिकात चलि आबैत तहिना
अन्धकार सेहो हाथ पसरि आबैत अछि
अलंकार – जकाँ विकसित होइत
अधलाह पाप जकाँ पूर्ण भरल एहि
अज्ञान व्यापक आधिक ज्योतिक अधिक
भयानक गम्भीर बुझि पड़ैत अछि।
एतय उपमा, रूपक
उत्प्रेक्षा विलक्षण वर्णनक प्रयोग भेल
अछि एहि तरहें हम देखैत छी जे ज्योतिक
एहि पाँति में अन्धकारक वर्णन बड़
विलक्षण ढंग सँ भेल अछि जे
[illegible] लोकप्रिय अछि।

BA-III मैथिली (H) सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्नक

उत्तर :- पातालक सन दुःप्रवेश, जीवक चारिमानल? हृदय, कालि-दीक कालीक सन, मायाक कामक पर्वत सन, निविड़ पापक सहोदर सन आरीर, अतङ्कक नरक सन भयानक, कुमनोरथ सन निष्फल उत्पात सन भयानक, मन सन मनिनो गामी, अहङ्कार सन उन्नत, पंडित सन अगम्य, पाप सन मलिन, स्वामित्व अतिव्यापक, दुःसहस्वामि दारिद्र्यवच, भयानक, गम्भीर शुचिभेद, अन्धकार देखु

Ans. व्याख्या — प्रस्तुत सन्दर्भ संकलन शीर्षक अन्धकार वर्णन प्रसंग सँ लेल गेल अछि। एहिठाम अन्धकार वर्णन कवि पर विलक्षण रूपें कएने छथि।

जेना पातालमे प्रवेश करब बड़ कठिन काज होइत अछि तहिना अन्धकार मे चलब-फिरब रास्ता बड़ कठिन काज होइत अछि। विश्वामे ज्ञात होइत अछि मानव के मनोवृत्ति कोन ~~प्रकारक~~ प्रकारक नहि अछि। अन्धकार मे दिशा ज्ञान लोक बिसरि जाइत अछि। यमुना नदीक सन अन्धकार कारी होइत अछि आ काजरक पहाड़ सन बुद्धि पवित्र अछि।